IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# श्रीमद्भगवत गीता में निर्हित आध्यात्मिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीक्षात्मक अध्ययन

निर्देशिका
डॉ. एकता पारीक
(प्राचार्या)
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

प्रस्तुतकर्त्री
मनभर कुमारी सैनी
(एम एड छात्रा)

सारांश –

जीवन के वास्तविक अनुभवों एवं व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए "श्रीमद्भागवत गीता" में वर्णित "श्री हरि कृष्ण" के दिये गए उपदेशों को समाहित किया गया है। वर्तमान समय में युवा वर्ग कम मेहनत में अधिक फल का इच्छुक हो जिसके कारण वह कर्म आध्यात्मिक समस्यों से जुझ रहा है और युवा वर्ग आक्रमक व्यवहार करते है जिसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ पनप रही है। इन समस्याओं के समाधान हेतू शोधार्थी ने वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भगवत गीता में आध्यात्मिक मूल्यों का समीक्षात्मक अध्ययन का चुनाव किया। जिसमें प्रत्येक अध्याय से आध्यात्मिक मूल्यों का चुनाव किया गया व उन्हें वर्तमान परिस्थिति से जोड़ते हुए एक मूल्य प्रत्यक्षीकरण मापनी व स्वनिर्मित प्रश्नावली सरल भाषा में तैयार करके विद्यार्थियों से मूल्य चुनाव करने को कहा। जिसे पढ़कर विद्यार्थियों को शैक्षिक समस्याओं का समाधान मिला। जैसे – एकाग्रता, लक्ष्य के निर्धारण की आवश्यकता, भविष्य संचेता आदि। शोध अध्ययन के उपरांत यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि वर्तमान परिस्थितियों में श्रीमद्भागवत गीता में अध्यात्मिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन सार्थक सिद्ध हुआ।

**प्रस्तावना –**

आधुनिक काल में परिवर्तन की गति बहुत तीव्र है प्रगति का अर्थ है परिवर्तन यदि सकारात्मक हो तभी सराहनीय है।

परिवर्तन हेतु सार्थक और तर्क संगत प्रतिलबन गीता की शिक्षा द्वारा दिया जा सकता है। बदलते युग में परम्पराजनित आवश्यकताओं के आधार पर स्थापित शिक्षा का शिक्षण पर्याप्त नहीं होगा। हमें जीवन विरोधी तत्वों को पनपने देने के लिए एवं नवीन मूल्य आधारित शिक्षा देकर समाज को प्रगति की ओर अग्रसर करने के लिए समय–समय पर गीता के निर्देषनीय उपागमों से शिक्षा प्राप्त कर आदर्श स्थापित करना चाहिए। गीता हमारे अहंकार को नष्ट करती है और हमसे ऐसी आत्मशक्ति भर देती है कि व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने लगता है। आस्था के पथ पर अग्रसर होता है। वर्तमान समय में मानव के विकास में जो सबसे बड़ी बाधा है, वह है उसका अन्तर्द्वंद्व, अहंकार, स्वार्थीपन आदि। जिसने मनुष्य के हदय को कुरूक्षेत्र में परिवर्तित कर दिया है। गीता इस द्वंद्व को दूर करने का माध्यम है, गीता मानसिक शांति प्राप्त करने का सबसे अच्छा प्रयास है।

भगवद् गीता के अनुसार ज्ञान कहीं बाहर से नहीं आता वह व्यक्ति के भीतर छुपा होता हैं यदि मनुष्य के हृदय आवरण को हटा दिया जाए तो मनुष्य को संब प्रकार का भौतिक तथा अधिभौतिक ज्ञान प्राप्त हो सकता है। ज्ञान की आत्मानुभूति के लिए ध्यान को केन्द्रित करना अति आवश्यक है। मन के केन्द्रीकरण द्वारा ही वास्तव में शिक्षा की प्राप्ति होती है। गीता की शिक्षा मनुष्य के चिंतन व मनन पर बल देकर उसे प्रेरणा प्रदान करती हैं आज हम गीता के आदर्शो को परिमार्जित करके उसे राष्ट्र हित में उपयोगी बना सकते है।

**समस्या का औचित्य –**

जब भी कोई अध्ययन/अनुसंधान कार्य किया जाता है तो उस अध्ययन की उपयोगिता, महत्व, प्रकृति, प्रासंगिकता आदि का औचित्य स्पष्ट करना इसलिए आवष्यक होता है कि हम इसके द्वारा यह सिद्ध कर सके कि अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष मानवीय जीवन व शैक्षिक जगत को किस प्रकार प्रभावित करेंगे। महात्मा गांधी जी के शब्दों में – ''मुझे भगवत गीता में एक ऐसी सात्वना मिलती है, जो मुझे सर्मन मौन दि माउंट (बाइबिल का एक प्रसंग) तक में नहीं मिलती। जब निराशा मेरे सामने खड़ी होती है और जब मैं बिल्कुल एकांकी महसूस करता हूँ और मुझे प्रकाश की कोई किरण नहीं दिखाई पड़ती, तब मैं गीता की शरण लेता हूँ। जहाँ तहाँ कोई न कोई श्लोक मुझे ऐसा दिखाई पड़ जाता है कि मैं विषम परिस्थितियों में भी तुरंत मुस्कुराने लगता हूँ।'' वर्तमान परिदृष्य में आध्यात्मिक षिक्षा में गीता दर्ष की उपादेयता से संबंधित जो भी साहित्य उपलब्ध हुआ, उसके अध्ययन के उपरांत शोधकर्ती इस निष्कर्ष पर पहुँची कि –

''श्रीमद्भगवत गीता में निहित आध्यात्मिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता'' इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण विषय है। पूर्व में गीता व उसके कई विषयों पर शोध हो चुके है, इसलिए शोधकर्त्री ने इस शीर्षक पर शोध करने का निश्चय यिा है।

**तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –**

1. **श्रीमद्भगवतगीता** – वह उपदेश जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन को महाभारत का युद्ध शुरू होने से पहले दिया था।
2. **आध्यात्मिक मूल्य** – आध्यात्मिक मूल्य धार्मिक विश्वासों से जुड़े होते है, वे मनुष्य व देवता के बीच संबंध स्थापित करते है।

**शोध के उद्देश्य –**

1. विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य अनासक्ति पर श्रीमद्भगवत गीता के प्रभाव का अध्ययन।
2. विद्यार्थियों के आध्यात्मिक आत्मानुभूति पर श्रीमद्भगवत गीता के प्रभाव का अध्ययन।
3. विद्यार्थियों के आध्यात्मिक आस्था मूल्यों पर प्रासंगिकता का अध्ययन।
4. विद्यार्थियों पर आध्यात्मिक मूल्य समाधि पर वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन।
5. विद्यार्थियों के आध्यात्मिक मूल्य कर्तव्यपरायण पर अध्ययन।

**शोध की विधि –**

किसी भी शोध कार्य को पूरा करने के लिए शोधार्थी का प्रमुख उद्देश्य समस्या का हल ढूंढना है। वर्तमान समय में शोध कार्य हेतु अनेक शोध विधियों का अध्ययन हेतु किया सकता है। शोधार्थी ने अपना शोध कार्य शिक्षा मूल्यों से संबंधित विषय वस्तु को अपनाया है। इस कारण प्रस्तुत शोध में वस्तु विश्लेषण विधि व सर्वेक्षण विधि का प्रयोग शोधार्थी द्वारा किया गया।

**जनसंख्या –**

प्रस्तुत शोध में जयपुर शहर के पाठकों का चयन किया गया।

**शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जयपुर शहर के 100 पाठकों का चयन किया गया।

**शोध में प्रयुक्त उपकरण –**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है +'

1. स्वयं निर्मित प्रश्नावली।
2. साक्षात्कार मापनी।

**शोध का परीसीमांकन –**

1. प्रस्तुत शोध का आधार ग्रंथ श्रीमद्भगव गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन तक ही सीमित रहा।
2. प्रस्तुत शोध श्रीमद्भगवत गीता में निहित आध्यात्कि मूल्यों तक ही सीमित रहा।
3. प्रस्तुत शोध श्रीमद्भगवत गीता के 18 अध्यायों के आध्यात्मिक पक्ष तक ही सीमित रहा।

**आँकड़ों का विश्लेषण –**

उपुर्यक्त आँकड़े मूल्य प्रत्यक्षीकरण मापनी व स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा प्राप्त किये गये है। यह मापनी व स्वनिर्मित प्रश्नावली 18 अध्यायों में वर्णित कुल 30 प्रश्नों द्वारा निर्मित है। इसमें सर्वाधिक संख्या में चुने जाने वाले मूल्यों के आँकड़े उपर्युक्त चार्ट में दशोये गये है।

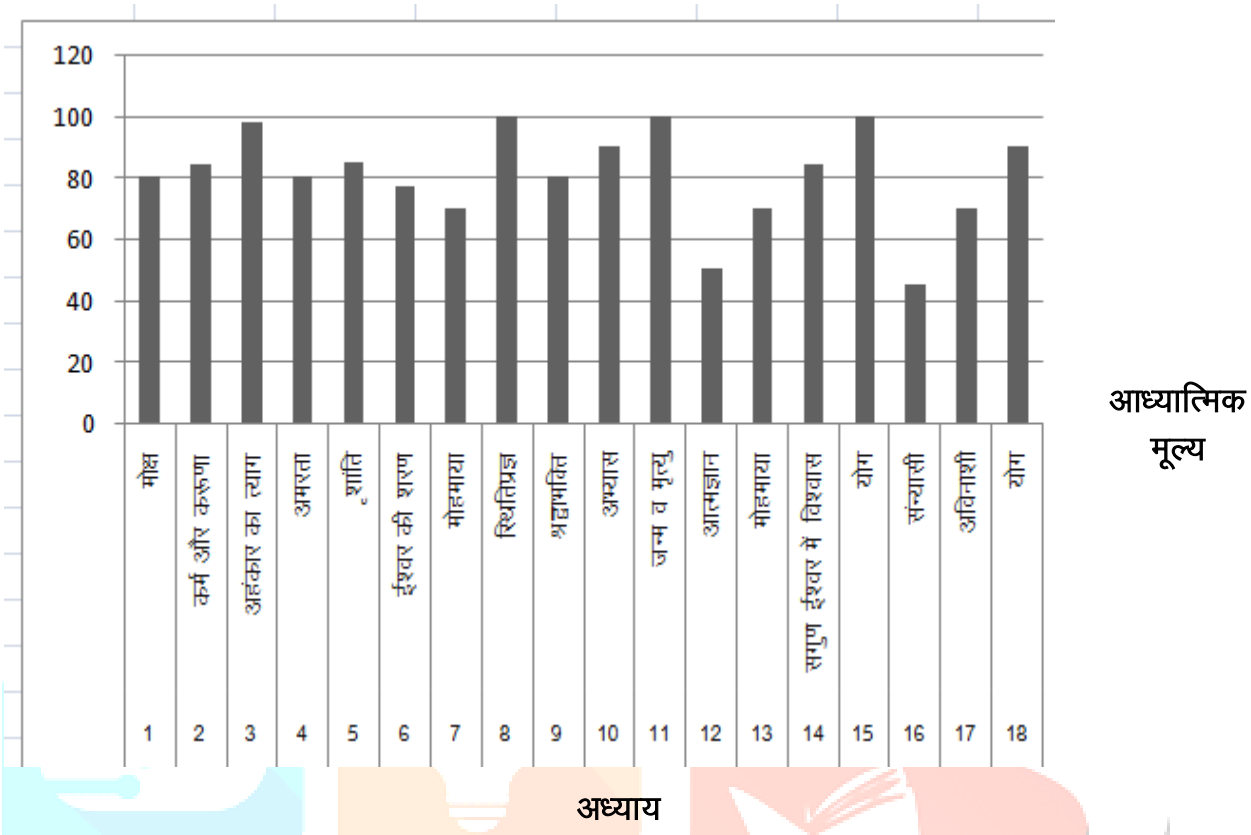


**भावी शोध हेतु सुझाव –**

1. शोध को श्रीमद्भगवत् गीता के अन्य मूल्यों (नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, शैक्षिक मूल्य) पर भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में 100 छात्रों पर किया गया है। जिसे बड़े न्यादर्श में भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किया गया है। इसे पूर्व और भविष्य परिप्रेक्ष्य में भी किया जा सकता है।

**शोध निष्कर्ष** – श्रीभद्भगवत गीता में निहित आध्यात्मिक मूल्यों के समीक्षात्मक अध्ययन से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विशेष रूप से आध्यात्मक के पथ पर फिर से अग्रसर होने में आध्यात्मिक मूल्यों जो कि गीता के समीक्षात्मक अध्ययन से प्राप्त हुए थे वे कारगार सिद्ध हुए है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची –**

1- गुप्ता, डॉ. महावीर प्रसाद (2005) ''शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श'' एच.पी.आगरा आगरा बुक हाउस, पृष्ठ सं. 52

2- डॉ. शर्मा, आर.ए. (2009) ''शिक्षा अनुसंधान'' मेरठ आर.लाल, बुक डिपो, पृ. सं. 72

3- मालवीय पंडित रामेश्वर प्रसाद (1990) ''गीता अवगाहन'' प्रभात प्रकाशन, दिल्ली पृ. सं. 45

4- भगवद् दर्शन (मासिक पत्रिका) 2004 श्री उज्ज्वल जाजू, मुम्बई पृ. सं. 5

5- पाण्डेय, विद्यानन्द (2004) ''प्राइमरी शिक्षक (पत्रिका) एन.सी.ई.आर.टी.